B.Ed. I[st] year

: Teaching of Social Science

Topic :- टोली शिक्षण (Team Teaching)

टोली शिक्षण प्रविधि का विकास सर्वप्रथम वर्ष 1955 मे हार्वर्ड विश्वविद्यालय मे हुआ। इसके बाद 1960 मे ब्रिटेन मे, ब्रिटेन मे इसका विकास जे० फ्रीमैन ने किया। धीरे-2 इसका प्रयोग स्कूलो और कॉलेजो मे किया जाने लगा।

शिकागो विश्वविद्यालय के फ्रांसिस चेज ने टोली शिक्षण (Team Teaching) का प्रभावशाली प्रयोग शिक्षण के लिए किया गया।

डेविड वारविक के अनुसार :- "टोली शिक्षण संगठन का एक स्वरूप है, जिसमे कई शिक्षक अपने साधनो, रुचियो तथा दक्षताओ को इकट्ठा कर लेते है, तथा विद्यार्थियो की आवश्यकताओ के अनुसार शिक्षको की एक टोली द्वारा उन्हे प्रस्तुत किया जाता है, और स्कूल की सुविधाओ के अनुसार प्रयोग किया जाता है।"

कार्लो-ऑलसन :- "एक अनुदेशनात्मक परिस्थिति, जहाँ पर दो या अधिक शिक्षक कौशलो से युक्त एक दूसरे के सहयोग से योजना बनाकर विद्यार्थियो के एक ही समूह पर इनको लागू करते है और विशिष्ट प्रकार के अनुदेशन के लिए लचीली समूहीकरण प्रविधि का प्रयोग करते है।"

P.T.O.

Scanned with CamScanner

* टोली शिक्षण के सिद्धान्त *

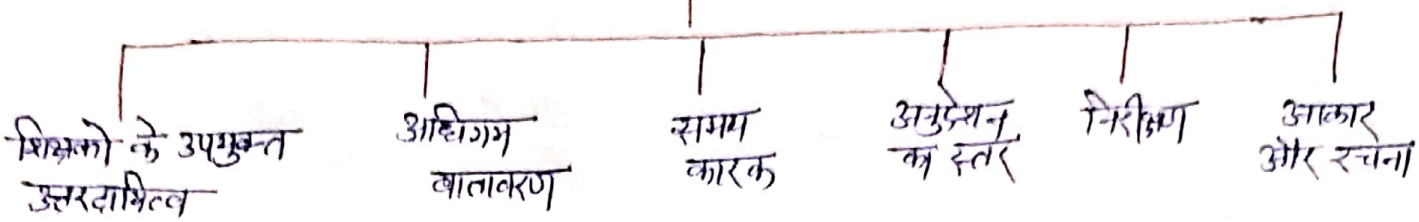

1. शिक्षकों के उपयुक्त उत्तरदायित्व

शिक्षको मे उनके कर्तव्यो तथा उत्तरदायित्वो का बँटवारा उपयुक्त ढंग से उनकी शैक्षिक योग्यताओ, रूचियो तथा व्यक्तित्व की विशेषताओ के अनुसार हो। अत: टोली शिक्षण मे टोली के सदस्यो का चयन बहुत ही सावधानी से किया जाना चाहिए।

2. अधिगम वातावरण

टोली शिक्षण मे अधिगम वातावरण मुख्य है - जैसे - पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कर्मशाला आदि।

3. समय कारक

टोली शिक्षण मे विषय के महत्त्व के अनुसार ही समय निर्धारित किया जाना चाहिए। कम महत्त्व के विषय को अधिक समय दिए जाने से टोली शिक्षण प्रभावहीन हो जाएगा।

4. अनुदेशन का स्तर

टोली शिक्षण के दौरान अनुदेशन प्रदान करने से पूर्व विद्यार्थियो को अवश्य प्रारम्भिक व्यवहार का अनुमान लगा लेना चाहिए।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

5. निरीक्षण

निरीक्षण कैसा हो यह समूह के उद्देश्य पर निर्भर करता है। अतः समूह के उद्देश्यों को निरीक्षण के समय ध्यान में रखना आवश्यक है।

6. आकार और रचना

समूह का आकार टोली शिक्षण के उद्देश्य के अनुरूप होना चाहिए। तभी सही टोली शिक्षण किया जा सकता है।

⇒ टोली शिक्षण की विशेषताएँ *

⇒ इसकी योजना लचीली होती है।
⇒ इसमें शिक्षक अपनी क्रियाओं को स्वयं निर्धारित करता है।
⇒ इसमें शिक्षक का उत्तरदायित्व एक ही शिक्षक का न होकर सम्पूर्ण टोली का होता है।
⇒ इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षण अधिगम (Teaching learning) को प्रभावी बनाना होता है।
⇒ स्कूल तथा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं तथा उपलब्ध साधनों को ध्यान में रखा जाता है।
⇒ यह एक शिक्षण विधि मानी जाती है।
⇒ यह उद्देश्यन परिस्थितियों को उत्पन्न करने की एक प्रविधि है।
⇒ विधि - सामूहिक उत्तरदायित्व पर आधारित है।
⇒ मूल्यांकन कार्य भी मिलकर किया जाता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

⇒ इसमे शिक्षक शिक्षण की योजना मिलकर बनाते है, तथा उसे लागू भी मिलकर करते है।

⇒ इसके दौरान एक विषय के किसी एक प्रकरण के विभिन्न पक्षो को एक-2 करके क्रम मे दो से अधिक शिक्षक पढ़ाते है।

⇒ यह Co-Operation पर आधारित है। इसमे भाग लेने वाले शिक्षक अपने-2 साधनो, योग्यताओ तथा अनुभवो को इकट्ठा करने का प्रयास करते है।

* टोली शिक्षण के उद्देश्य *

⇒ अनुदेशन की गुणवत्ता मे वृद्धि करना।

⇒ विद्यार्थियो की रूचियो तथा क्षमताओ के अनुसार कक्षा-शिक्षण को प्रभावशाली बनाना।

⇒ विद्यार्थियो के समूहीकरण मे लचीलेपन को बढ़ाना।

⇒ शिक्षक-वर्ग मे आकर्षक योग्यताओ, दक्षताओ और उनकी रूचियो का सर्वोत्तम उपयोग करना।

by
B.R.C. Deoband (SRE)
Assi. Pro. — Parveen Rafi

Scanned with CamScanner